

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. १२०४ घ

Title वाक्य सुधारिणी भाषाटीका संहिता

Author टीकाकारः जगन्नाथः

Extent २१ पत्राणि Age

Subject वेदान्त शास्त्रम् "अपूर्णम्"

वाक्सुधा भाषाटीकासहिता

१२०४

२९

श्रीगुरुभ्योनमः॥वाक्यसुधाप्रारंभः॥ऋषीश्वरकृपापांगलवसंस्प
र्शनेनवै॥काचित्प्रसूताबुद्धिर्वेदांतार्थावगाहने॥१॥श्रीमत्ऋषी
श्वरपदरजहृतिमिरसमुळउद्धिजविवेकांकुरेउद्धविजेमनोभू
मिदासाची॥१॥विशेषहाट्टगृह्यविवेक॥जेषमुमुक्षूजनसम्यक्
कृतकृत्यहोतिहायेक॥निश्चयकेलागुरुवर॥२॥प्रत्यक्षअनुभवार्त्ता
॥साध्यसाधनतिमिरनुरवी॥तोहाग्रंथविवेकवैभवि॥सुमनसा
सिद्धिदे॥३॥दृश्यासिमिथ्यतादाउनि॥दृगतेसत्यवप्रतिपादुनी॥
तेदृगआत्माक्षणेनि॥ग्रंथावलोकनेजाणिजे॥४॥दृश्यतेअसंके
ते॥दृगतेकोणासारिखे॥तेहीलक्षणसंम्यके॥विवरीजेलियेग्रंथी॥५॥
दृश्यतितुकेअनात्माजाण॥दृगतीआत्मासनातन॥याचानिवाडा
सूक्ष्मने॥ग्रंथावलोकनेकरावा॥क्षणेअपणचिब्रह्महेकळे॥

अज्ञानांधकारविवले॥ आत्मा घेइजे करतले॥ तो हा ग्रंथ स्वतः सिद्ध ॥ ७ ॥
 श्लोक॥ रूपं दृश्यं लोचनं दृग् दृग् दृश्यं दृक् मानसं॥ दृश्याधी रतयः
 साक्षी दृग्मेव न तु दृश्यते॥ १ ॥ टिका॥ येथुन दृग् दृश्याचे विवरण करि
 जेते॥ रूप जे जे दिसते त्यास रूप म्हणवे॥ त्या रूपास दृश्य म्हणवे॥
 त्याचा पाहणार जो लोचन त्यास दृक् म्हणवे॥ लोचन दृष्टा जो त्या
 स दृश्य हो जाणुन॥ त्या लोचनाते पाहणार जे मन ते दृष्टा जाणा
 वे॥ त्यामनास दृश्य व दृष्टा पुण त्यामनाचा जो दृष्टा साक्षी त्यास दृष्ट
 व जाणवे॥ दृश्यास च दृग् हे हीनाव तो साक्षी दृष्टाच होय तो का
 ही दृश्य न वे॥ तो सर्वाचा जाणता ह्मणून त्याहून जाणता दृस
 रा कोण्ही नाही॥ तोच आत्मा ब्रह्म॥ हे जे बोलिले श्लोक व्याख्या

॥ १ ॥ ५१५

10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 8

नयाचा विस्तार की दृश्यासनानासह्यून आनात्मा जाणवे ॥ द्रव्या
सयेकसह्यून जाणवयाचा निवाडा श्लोके करून बोलि जेतो ॥
श्लोक ॥ नीलपीतस्थूलसूक्ष्मह्रस्वदीर्घादि भेदतः ॥ नानावि
धानिरूपाणि पश्येन्नोचने मेकधा ॥ २ ॥ टीका ॥ दृश्याचे भेद ल
क्षण ते ते सनी के पीवळे आरक्त ठवळे शामपितांश जे जे वर्ण ते ते सच
स्थूलसूक्ष्मह्रस्वदीर्घाकाराचे जे जे भेद असे जे जे देखण्यात ये
ते ते सर्व ही स्थापने अनेका पदार्थां ते येकरूप जे लोचने ते पाहते ॥
श्लोक ॥ आंध्यमांद्यपटुत्वेषु नेत्रधर्मेष्वनेकधा ॥ संकल्पयेन्मनः
श्रोत्रहृगादौ योज्यतामिति ॥ ३ ॥ टीका ॥ ते दृश्य पाहणार जे लोचने
हा लोचनाचे नाना त्व ते असे कि ॥ अर्धता आणि मंदता आणि

२॥

२॥

[Faint, illegible handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

॥५॥

वे॥ श्लोक॥ कामः संकल्पसंदेहो श्रद्धाश्रद्धे धृतीतरे॥ हीधीभीरिरिव
मदीन भासयत्येकधा चितिः॥४॥ टिका० मनचेधमजे ते ऐसे काम
आणि संकल्पसंदेहवाणि अश्रद्धावाणि श्रद्धावाणि धैर्य लज्या
बुद्धिभय ऐसे अनेक मनचे जे त्यास पाहणार साक्षी जो तो येकरूप
होय॥ श्लोक॥ नोदिति नास्तमायाति न दृष्टियाति न क्षयं॥ स्वयं विभास
थान्यानि भासयेत्साधनं चिना॥५॥ टिका॥ ते मनचे साक्षीचे तन्य जे ते
उदयाते पावत नाही आस्ताते हि पावत नाही दृष्टीते पावत नाही क्षयही
यास नाही॥ असे दृग्स्वरूप आत्मा जो साक्षी तो स्वये भासत आस्ता आ
ण रविजे दृश्य मात्र जे तितक्यास भासवितो आणी आपण स्वयं प्रभू होय
ऐसे स्वयं प्रकाश आसोन दुसरे प्रकाश वयास साधनांतराचि अपेक्षाना

॥५॥

[Faint, illegible handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side.]

ही जैसे साक्षी चैतन्य परब्रह्म जे ते बुद्धि चेठां इ प्रतिबिंबले ॥ श्लो
 क ॥ चिच्छाया जे शतो बुद्धी भानं धिस्तु दि धामता ॥ एकाहं छति
 रन्या स्यादंतःकरणरूपिणी ॥ ६ ॥ टिका ॥ चैतन्य ब्रह्म जे ते बुद्धी
 चेठां इ प्रतिबिंबले अैसे जे बुद्धि ते दो प्रकारची येका बुद्धि भागा
 स अहंकार रूपणावे ॥ दुसऱ्या बुद्धिच्या भागास अंतःकरण रूपणावे
 ॥ श्लोक ॥ छायाहंकारयोरेक्यंतसायः पिंडवन्मतं ॥ तदहंकारतादा
 त्वादेहश्चैतनतामियात् ॥ ७ ॥ टिका तो अहंकार जो सा चेठां इ प्रतिबि
 बले चैतन्य हा दोघासिरेक्य जे ते तापल्या लोखंडाचे गोळ्या सारिरे
 जाले ॥ तो चिदाभासा सहोत अहंकार जो तो देहासिमीळाला अ
 स्ता जड जे देह ते चैतन्य झाले ॥ श्लोक ॥ अहंकारस्य तादात्म्यं चिच्छा

यां देहसाक्षिभिः॥ सहजं कर्मजं भ्रंति जन्यं च त्रिविधं क्रमात्॥ ८॥

विका०॥ साध्यं हंकाराचे तादात्म्यजे ते चीछये सिं देहासी आणि

साक्षीसी॥ ऐसे ती दासी अहंकार तादात्म्य ह्मणावे॥ देहासी अं

हंकाराचे जे तादात्म्य ह्मणावे ते कर्मजन्य॥ आणि चिच्छयेसी

अहंकाराचे तादात्म्यजे ते सहज जन्य ह्मणावे॥ साक्षीसी अहंका

राचे तादात्म्य जे ते भ्रंति जन्य ह्मणावे॥ श्लोक॥ संबंधिनोः स

तो नास्ति निवृत्तिः सहजस्य तु॥ कर्मक्षयात्प्रबोधाच्च निर्वर्तेते

क्रमादुभे॥ ९॥ टीका या तादात्म्याच्या निवृत्त्या प्रकार

बोलीजे तो जोवर चिदाभास अहंकार येकरूपे अहेतदो

॥ ६ ॥

द्याचा संबंध जो वर आहे तो वर सहज नादात्म्य जेचि दाभास सोसाची नि
 रति नाहि ॥ ते प्रारब्ध कर्म ईश दोषे हि नाश पावतील आणि देहासीजे
 नादात्म्य अहंकाराचे ते कर्म निक्षय जाला अस्तासुटे ल ॥ निवृत्ताग्र
 तिकर्मचा क्षय जाला ह्मणजे अहंकाराचे नादात्म्य सुटो न देहनि ॥
 श्वयं पडतो ते देहाचे कर्म जनादात्म्य ह्मणावे ॥ आणि साक्षी सीता
 दात्म्य अहंकाराचे ते भ्रांतिजन्य होय ते तर जेव्हा ज्ञान आपरोक्ष
 होईल तेव्हा भ्रांतिजन्य नादात्म्य नाश पावेल ॥ भ्रांतिजन्य गलेह्म
 णजे सर्व देह आणि अहंकार मिथ्या ते दग्ध पट न्याये करून अस्ताहेत
 ॥ श्लोक ॥ अहंकार लये सुखे भवे देहो विचेतनः ॥ अहं कृति वि काशो

21

धः स्वप्नः सर्वस्व जागरः ॥१०॥ टिका० सोपेचे ठाई अहंकाराचा लय जाहला
असनादेह जो अचेतन होतो ॥ आणि अहंकाराचा विकार सात्त्विक
गुण जे स्वप्न आणि जागरण अवस्था होते ॥ श्लोक ॥ अतः करणवृत्ति
श्च चिच्छायेक्यत्तमागतां ॥ वासनां कल्पयेत्स्वप्ने बोधे ह्ये विषया
न्बहिः ॥११॥ टिका० अतः करणाचि वृत्ति ज्या वृत्तीचे ठाई आत्म्या
चे प्रतिबिंब पडले ॥ म्हणजे वृत्तीच्या ठाई ज्ञान जे तो चिराभा
सह्य पावा ॥ असे चिराभा सासहीत वृत्ति जे ते स्वप्नाचे ठाई वा
सना कल्पिते आणि जाग्रत काळी इंद्रिये करून बहिर्विषयाते ही क
ल्पिते ॥ श्लोक ॥ मनो हं ह्युपादानं लिङ्गमेकं जडालोकं ॥ आवस्थात्र ॥१२॥
यमन्वेति जायते म्रियतेपि वा ॥१२॥ टिका ॥ मन आणि अहं

कारहे उपादानलिगदेहाचे ते जड ऐसे लींगदेह आवस्थात्रयाते
आनुभविते ॥ उसन्नहोले आणि मरते ॥ श्लोक ॥ शक्तिद्वयं हि मा
याया विक्षेपावृत्तिरूपकं ॥ विक्षेपशक्तिर्लिगादिब्रह्मांडांतं ज
गतत्सृजेत् ॥ १३ ॥ टीका ॥ मायाह्मणजे स्वरूपविस्मरणग्रास
मायाह्मणवे अज्ञानह्मणवे प्रकृतिह्मणवे ॥ तमह्मणवे सु
षुप्तिह्मणवे कारणह्मणवे अव्यक्तह्मणवे ॥ ऐश्या आपत्तया
स्वरूपाचे आज्ञानाचिनावे तो तमायाह्मणवे ह्या मायेच्या
दोन शक्ती ॥ येक विक्षेपशक्ति ॥ दुसरी आवरणशक्ति विक्षे ॥ १५ ॥
पशक्ती ते ऐसी लिगादिकरूप ब्रह्मांडपर्यंत जग निर्माण करी

ते॥ दोन देह समष्टी आणि व्यष्टी हा सर्वही विक्षेप ह्मणावा॥ कवृह भो
कृत्त ह सर्व विक्षेपाचे लक्षण॥ श्लोक॥ सृष्टिर्नाम ब्रंम्ह रूपे स॥
चिदानंद वस्तु निबं बु फेनादि वस्तु सर्व नाम रूप प्रकाशनं॥ १४॥ टिका॥ विक्षेपा
सि सृष्टी ही सणा वे सृष्टी चेतें लक्षण वै से कि स चिदानंद वस्तु जे
१०॥ ब्रंम्ह तेथे नाम रूपे भासली उदकाचे फेसाचे दृष्टांताचे परीयास सृ
ष्टी ह्मणा वि आता दुसरी आवरण शक्तीचे लक्षण॥ श्लोक॥ अंतर्दृग्
दृश्यो भेदं बहिः च ब्रंम्ह सर्गयोः॥ यादृणोऽपरा शक्तिः सा संसार
स्थकारणं॥ १५॥ टिका॥ पूर्व व्याख्या निदृग् आणि दृश्य जे दारव विले ते सर्वही
दृश्य आत्मा जो द्रव्य हा हून वेगळे भासोन ते वेगळे पणास अवरण धातून
एक पणेचि भासने॥ आणि बाहेर ब्रंम्ह आणि सृष्टीचे वेगळे पणास न जा

गूनैक्यत्वं भासने याचे लक्षण स्पष्ट सांगू ॥ दृग्दृश्याचे आवरण लक्षण जे द्रव्य न
 दीसून दृश्य जे देहेन्द्रियादिकांचे ठाडं आत्मत्व बुद्धी आणि सत्य त्वे प्रत्यगात्मा वि
 षई आवरण ॥ आणि दुसरे ते ऐसे जे जगत्कारण ब्रह्म ते न दिसोन जग च स
 र्व भासाविया स आवरण शक्ति ह्मणावे ॥ हे संसारास कारण होय ॥ श्लो
 क ॥ साक्षिणः पुरतो भानं लिङ्गदेहेन संयुतं ॥ चिच्छया याः समावे
 शान् जीवः श्याव्यावहारीकः ॥ १६ ॥ टीका ॥ साक्षी जो प्रत्यगात्मा
 यास हे दोन्ही देह लिङ्गदेह आणि सूक्ष्मदेह वेगळे पणे भासता हे तया दो
 हीत चिदाभासाचे प्रतिबिंब आहे ऐसे देह दया सहीत चिदाभासा
 सियवहारिक ह्मणावे ॥ श्लोक ॥ अस्य जीवत्वं मारोपात् साक्षिणो

॥ ११ ॥

॥

॥ ११ ॥

आवभासते॥ आरतौ तु विनयायां भेदे भाते प्रयांति तत्॥ १७६॥ टिका॥ व्यवहारीक जीवदे
 हृदया सहीत जो ह्मरला॥ ते जीव वृजे साक्षी जो प्रसगात्मायाचे ठाड आरोपास्तवभास
 ते वस्तुता साक्षीचे ठांडी दुजे च नाही मंग जीव तू कैचे॥ ते आवरणशक्ति जे दृग्दृश्य
 विवेकज्ञानक्षालयावरनाशपावति आस्ता साक्षीचा आणि दृश्याचा भेद भासत अ
 स्ता जीवपुष्प ही राह पावत नाही॥ श्लोक॥ सर्गस्य ब्रह्मणस्तद्वत् भेदमादृशतिष्ठति
 ॥ याशक्तिस्तद्वशाद्ब्रह्मविरूतत्वेन भासते॥ १७८॥ टिका॥ सृष्टि आणि ब्रह्म जे या दो
 हीचे वेगळे पण असले क्यस पराहते ते ते आवरणशक्ति ती कर्ती ब्रह्म जे ते ही वि
 काररूपे भासते॥ श्लोक॥ आत्राप्यावृत्तिनाशेन विभाति ब्रह्मसर्गयोः॥ भेदस्त
 यो विकारः स्यात्सर्गे न ब्रह्मणि क्वचित्॥ १७९॥ टिका॥ ते से विकाररूप भास
 ले॥ ब्रह्म ज्या माये कर्ता ते माया बोधेनाशपावली आस्ता ब्रह्म आणि जग या
 दोहीचे वेगळे पण दिसते॥ या वेगळे पणी पाहता विकार जो आहे तो तर सृष्टी
 चे ठांडी ब्रह्मी तीळ मात्र नाही॥ आता जग आणि ब्रह्म याचे एक आणि वेगळे पण

॥ १७२॥

१२॥

बोलिजे ॥ श्लोक ॥ आस्ति भाति प्रियं रूपं नाम चेष्टं शपंचकं ॥ आद्यत्रयं ब्रह्म रूपं जग
 रूपं ततो द्वयं ॥ २० ॥ ~~विना~~ वरुं वायु अग्नि जलो वीषु देव तिर्यङ् नरादिषु ॥ अभिभाः
 सच्चिदानंदं अभिद्यते रूपं नाम नी ॥ २१ ॥ त्रयेन तद्वयं ग्रस्तं तत्रयं त्रैकरूपं ॥ अतः सर्व
 चिदाकारं मायातीतं निरंजनं ॥ २२ ॥ टिका सद्व्याणिचिदव्याणिति सराधानं
 दयास अस्ति भाति प्रियं हेहीनाव ॥ ऐसिति न्ही व्याणिनाम व्याणिरूपे ऐसे पाच
 १३५ अंशया पांचाचे ठई तिन्ही पाहि ली ते परब्रह्म स्वस्वरूप होत ऐसे जाणावे नाम व्याणि
 रूप जगा सह्यणावे ते नाम रूपे कोठे आहे तद्गुणाल तेही सांगु आणि ब्रह्म ही
 सांगु ॥ आकाश वायु अग्नि जल वीषु पंचभूत व्याणि भौतिक जे देव तिर्यंगूनर
 पशु आदिक रूप या सर्वाचे ठई सच्चिदानंद जे ते अभिन्न आहे ल नाम रूपे जे या
 सच भेद आहे त्या सच्चिदानंद ही नाम रूप आत्मक देत जे ते व्यासि देते तिन्ही ये
 रूपे करून वर्तता हे तयास्तव सर्व हि चिदाकार होय माया तित निरंजन होय ॥ श्लोक

२३॥

ना

उपेक्षामरूपेदेसच्चिदानंदवस्तुनि ॥ समाधिं सवदिकुयं विदुदये चाथवावहिः
॥ २३ ॥ टिका ॥ यास्तव नामेवाणिरूपेयादोहीची उपेक्षा करून सच्चिदानंदवस्तूचे
ठाई समाधि असंड करित जावी ॥ ते समाधी दो प्रकारची आहे ॥ श्लोक ॥ सवि
कल्यो विकल्यश्च समाधिर्हि विधोदृदि ॥ दृश्यशब्दानुविद्रोयं सविकल्यः
पुनर्दिधा ॥ २४ ॥ टिका ॥ येक सविकल्य समाधिदुजिते निर्विकल्य समाधी
ऐशा दो प्रकारामध्ये सविकल्य समाधि जो तो दो प्रकारचा ह्यात येक शब्दानु
विध्य आणि येक दृश्यानुविद्य ॥ श्लोक ॥ कामाद्याश्चित्तगा दृश्यास्तत्साक्षि
त्वेन चेतनं ॥ ध्यायेत्तदृश्यानुविद्रोयं समाधिः सविकल्यकः ॥ २५ ॥ टिका ०
दृश्यानुविद्य चित्तक्षण काम संकल्य श्रद्धा अश्रद्धा आदिकरून जे जे वृत्ति
उठेल चित्तगत सर्वहि आपण जाणतो या सर्वा वृत्तिचा साक्षितो कूटस्थ ब्रह्ममी होय ॥

१३॥

१३

१३॥

ऐसे ध्यान करावे या ससविकल्प दृश्यानुविद्ध समाधि ह्मणवे ॥ श्लोक ॥ आसंगः स
च्चिदानंदः स्वप्नभौंदैतवर्जितः ॥ आस्मीति शब्दविद्योयं समाधिः सविकल्पकः ॥
२६ ॥ टिका ॥ आताशब्दानुविधाचे लक्षण ऐसे मी असंग आहे सच्चिदानंद आहे
स्वयंप्रकाश आहे दैत रहित मी आहे ॥ ऐसे मुखे करून ह्मणवे तो हा शब्दानुविद्ध स
विकल्प समाधि ॥ श्लोक ॥ त्वानुभूतिरसावेशादृश्यशब्दानुपेक्ष्य तु ॥ निर्विकल्पः
समाधिः शान्तिर्वा तस्थित दीपवत् ॥ २७ ॥ टिका ॥ आता निर्विकल्प समाधिचे ल
क्षण आत्मानुभव जो या अनंदाचे आवेश करून दृश्यानुविद्ध आवेशाब्दानुवि
द्य समाधिया दोहीची उपेक्षा करून निर्विकल्प होऊन राहणे जे निवांत स्थ
ति द्याचे परी ते निर्विकल्प समाधि ह्मणवे ॥ श्लोक ॥ दृदिव बाह्यदेशेऽपि य
स्मिन्कस्मिंश्च वस्तुनि ॥ समाधिरायः सन्मात्रान्नामरूपनिगदतिः ॥ २८ ॥
टिका ॥ हृदयाचे ठाई आथवा बाह्य देशाचे ठाई जे ने वस्तु मात्र याचे ठाई सन्मा

त्राचे चिंतन करणे नाम रूपे वेगळी करून हायेक समाधि होय ॥ श्लोक ॥ अखंडेक
 रसं वस्तु सच्चिदानंद तत्क्षणं इह विच्छिन्नचित्तं येन समाधिर्मध्यमो भवेत् ॥ २९ ॥ टि
 का ॥ आखंडे येकर सवस्तु जे सच्चिदानंद तत्क्षण ते चिंचितित जे वेती समध्य स
 माधि ह्मणावि ॥ श्लोक ॥ स्तब्धीभावो रसास्वाद तृतीयः पूर्ववन्मतः ॥ ऐतैः स
 माधीभिः षड्भिर्नयेत्कालं निरंतरं ॥ ३० ॥ टिका ॥ निर्विकल्प रसाचे आस्वादेने
 करून स्तब्ध होणे हा पहिले निर्विकल्प समाधि सारी रवार सास्वाद समाधी
 तिसरा होय ॥ ऐशा समाधिक करून निरंतर काळाने हरण करावे ॥ समाधिर होत
 राहता तथापु सुवत् पामर जाणावा ॥ ऐसे ब्रह्म निष्ठ जे श्रुकादिक सनका
 दिक आणि ब्रह्मदेव तथा जनकादिक सनकादिक आणि जे जे जे समा
 धि मध्ये चले राहता हेत ते क्षण मात्र समाधि वाचून राहत नाहीत ऐसे अप
 सदैव

ले

रोक्षानुभूतिमध्ये पूर्णानि रूपिते असे ॥ श्लोक ॥ देहाभिमाने गलिते विशाते परमात्मनि
॥ यत्र यत्र मनो याति तत्र तत्र समाधयः ॥ ३१ ॥ म्रियुते हृदयग्रंथिः छिद्यंते सर्व संश
याः ॥ क्षीयंते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावर ॥ ३२ ॥ टिक ॥ परमात्मा देहाति जेथे
ततो मि आहरे सा प्रत्यक्ष आत्मानुभव जात (आस्ता जेथे मन जाते तेथे
तेथे समाधि च होय ॥ हृदयग्रंथि ह्मणि जे अहंकार नाश पावतो सर्व संश
य छेदता हेतु कर्म सर्व क्षयास पावता हेतु जे ह्मा परावर आत्मा मी च होय रे
सेक वता ॥ श्लोक ॥ अवच्छिन्नश्चिदाभासस्तृतीयः स्वप्नकल्पितः
॥ विज्ञेयस्त्रिविधो जीवस्तत्राद्यः पारमार्थिकः ॥ ३३ ॥ टिका ॥ त्री प्रकार
चे जीव येक अवच्छिन्न दुजा चिदाभास तिजा स्वप्न कल्पित याति घामधे
परीता जो तो पारमार्थिक होय ॥ श्लोक ॥ आवच्छेदः कल्पितः स्यादवच्छे

यत्तु वास्तवं ॥ तस्मिन् जीवत्तमारोपात्तं ब्रह्म तं तु स्वभावतः ॥ ३४ ॥ टिका ॥ पहिला
जो पारमार्थिक जीवत्तं तलायाचे अवच्छेद रेसे नाव्या विधी निणय रेसा
किते ब्रह्म जे ते आवच्छेद होय ते सत्य आहे ॥ आणि तेथे कल्पित जो जीव अ
वच्छिन्न तो लटका ॥ ते ब्रह्मी आरोपास्तव तेथे जीव पण पाहता ते ब्रह्मच होय
॥ श्लोक ॥ आवच्छिन्नस्य जीवस्य तादात्म्यं ब्रह्मणा सह ॥ तत्त्वमस्यादिवाक्यमि
जमुर्नेतरजीवयोः ॥ ३५ ॥ टिका ॥ तोच वच्छिन्न या नावाचा पारमार्थिक जीव ॥ ११५ ॥
वजो ह्या जीवाचे तादात्म्य ब्रह्मासि होय तो सदैव मी ब्रह्म आहे असे भावणे
करून स्वरूपी तादात्म्य करून असतो ह्या सत्य तत्त्वमसीमा ह्या वाक्य प्रमाण जे
भुद्ध जीव ह्या सगुण सुखे उपदेशा लाकीलु ब्रह्म आहे सत्या वाक्ये करून ब्रह्मी तादा
त्म्य होते ते सैर्नेतर जीव जे हे दोघे स्वप्न कल्पित आणि प्रापंचिक यांचे तादा

त्यब्रह्मोनाहि॥श्लोक॥ब्रह्मण्यवस्थितामायाविक्षेपावृत्तिरूपिणी॥आवृत्त्या
खंडतां तस्मिन् जगदुतौ प्रकल्पयेत्॥३६॥टीका॥ब्रह्मजे आसा स्वरूप
तेथेराहि लि जिमायाते विक्षेपक तिहोय॥आवरणक तिहो यया दो लक्ष
पाचा अर्थ तो पूर्व च निरोपित॥तो ले साकि ब्रह्मीची आवंडता जे
16 तीला आवरण घालून त्या आवंडते चे ठाई चि जीव आपण जग कल्पि
ले॥श्लोक॥जीवो धिस्त चिदाभासो भवेद्भोक्ता पिकर्मकृत्॥भोग्य रूपमि
दं सर्वं जगत्स्याद्भूतभौतिकं॥३७॥टीका॥जिव जे बुद्धिचे ठाई प्रतिबिंबला जेतो
च भोग आदिकरून कर्मकृत् तिहो यया जीवास चहे सर्व ही जग पंच भूते आणि
चौ सा मिची भौतिक शरीर त्याचे भोग्य होय चौदा भूवन त्या ठाई च्या रखाणिची
शरीरे धरून त्यासा कर्म करून तेथे तेथे जाऊन जगाचा भोग घेतो॥श्लोक॥०१॥

१६१

अनादिकालमारभ्यमोक्षापुर्वमिदं ह्यं॥ व्यवहारे स्थितं तस्माद्दुभयं व्याव
हारीकं॥ ३८॥ टिका॥ या जगामध्ये तो हा जीव आनादिकाळा पासून जो
करमोक्ष होय तो पर्यंत भूत भौतिक जगाचे ठाई व्यवहार करी तो होय
न व्यवहारीक होय॥ श्लोक॥ चिदाभासस्थितानिद्राविक्षेपावृत्तिरु
पिणि॥ **आवरण** जीव जगती पुर्वे नुनैव कल्पयेत्॥ ३९॥ टिका॥ चिदाभा
स जीव जो हा याचे ठाई जे हे निद्रासामयि सारखिते निद्रा विक्षेप
कति आणि आवरण कति आवरणचे लक्षण ते ऐसे की जीव आ
णि जग यास आवरण घालून हे नदीसूदे जग दुसरे स्वप्न कल्पित
नवे चरचिते हे सस जग नदीसूदे जे हे आवरण आणि स्वप्न कल्पन हा
विक्षेप॥ श्लोक॥ प्रलितकाल एवैतं स्थितत्वात्प्रालिभासिके॥ नहि स्व

र

१०॥

प्रप्रबुद्धस्य पुनः स्वप्ने स्थितिस्तयोः ॥ १८ ॥ टिका ॥ स्वप्नकाली च स्वप्नप्रती-
तभासने जागृतियानंतरनाहो मगस्वप्नीराहणे कैच ॥ श्लोक ॥ प्रति
भासिक जीवो यस्तज्जगत्प्रातिभासिकं ॥ वास्तवं मन्यते न्यस्तु मिथ्ये
ति व्यावहारिकः ॥ ४१ ॥ स्वप्नी प्रातिभासी क जीव ज्ञाया चिजे प्रातिभा-
सिक द्विणिजे भासमात्र तले ये स्वरे मानितो ज्ञो निव परंतु व्यावहारी-
क जीव सात्ता लटी के मानितो ॥ श्लोक ॥ व्यावहारिक जीवो यस्तज्जगद्व्या-
वहारिकं ॥ संसृष्टं प्रत्येति मिथ्येति मन्यते पारमार्थिकेः ॥ ४२ ॥ टिका ॥ व्याव-
हारिक जीव ज्ञो तो या व्यवहार जगते सप्तमानितो परंतु पारमार्थिक जी-
व ज्ञो तो या व्यवहारिका समिथ्या मानितो निवृत्तः पुरुष जे जे हो ब्रह्मी
एक्य के लोहा स व्यावहारिक जीवाचा व्यवहार मिथ्या होय व्यवहारिक

जीवजगचे ठाई वृत्तिनिमित्त स्त्री धनानिमित्त महाघोर यत्न करीतात अ
 मीहोतात ते सर्व व्यवहारापर मार्थिक जीवास मिथ्या ॥ श्लोक ॥ पा
 रमार्थिक जीवश्य ब्रह्मेक्यं पारमार्थिकं ॥ प्रयति वीक्षते नान्यदी
 क्षते चानृतासना ॥ ४३ ॥ टिका ॥ पारमार्थिक जीव जोग्याचे ब्रह्मारेण
 क्य हेच खरे मानून आणखी काही पाहत नाही आणि पाहत जर हे ज
 गतरते मिथ्येचे पाहतो ॥ श्लोक ॥ माधुर्यद्रवशैत्यादि जलधुमांस्तरंग
 के ॥ आनुगेव्याप्यतिष्ठन्ति फेनेप्यनुगता यथा ॥ ४४ ॥ मिथुरताद्रव
 पणशीतळता हे जळचे धर्म तरंगांचे ठाई जाऊन राहतात तेच फेसाचे ठा
 ई जाऊन राहता हेतया दृष्टान्ति साक्षीचे ठाई सच्चिदानंद जे अहेतु ते ॥ १९ ॥
 देहावर पाहवे ॥ श्लोक ॥ साक्षिस्थाः सच्चिदानंदा संबधाव्यावहा

२०
रिक्ते ॥ तद्वारेणानुगच्छंतितथैवप्रातिभासिक्ते ॥ ४५ ॥ टिका ॥ साक्षिआत्माजो
यान्यागईचे सच्चिदानंदधर्मजेते संबंधेकरूनव्यावहारीकजीवाचेगई
येताहेतयाव्यवहारीकजीवाचेद्वारेचप्रातिभासिकजीवाचेगईजा
ताहेततेसच्चिदानंदाचे लक्षणकायक्षणालतरसांगु ॥ सलक्षणजेस
र्वत्रसर्वकाळिआहेचिदक्षणजेशानस्वरूपअनंदक्षणजेअखंडतेरेसे
सदैवआहेतानआवडतेसच्चिदानंदक्षणवे ॥ श्लोक ॥ लयेफेनस्य
तद्रमद्रिवद्यास्तुतरंगके ॥ तस्यैवविलयेनीरेतिच्छेतेयथापुरा ४६ ॥
प्रातिभासिकजीवस्यलयेस्युच्यविहारिके ॥ तल्लयेसच्चिदानंदाः प
र्यवस्यंतिसाक्षिणि ॥ ४७ ॥ टिका ॥ जैसेजळाचेधर्मद्रवशोयादिकफेना

एचदनाइयेकनकवारचातैपुजीतंनप्रसुनोद्युपैकपु रतीपै
वीवधरसहीतेनैवभक्षोपहारैक्षंता॥७॥नमोनीशंकशु
धित्रीगुणवीरहीतो ध्वंसमोहंधकरोनासायेनैवदध्नी
वीदतभवगुणंनैवदृष्टंकदाची उन्मन्यावस्थयात्वं
वीदीतकालिमलेशकरंनस्मरामीक्ष्यंत॥८॥ध्यानंभीतेसीवा
ख्येप्रचुरसुखसुरधनुनैवदंतंदीजेभ्योहव्यंतेतत्क्षसंख्या
हूँवहवहनेनोपीतंवीजमंत्रेनोपोशंयांगतीरेवृतचरणवीधौरद
आयेनदेवंक्षतं॥९॥नोशक्यंस्मार्थकर्माप्रतीपदगहने॥
प्रहवायाकुलाक्षे श्रोतेवार्ताकथंमेदीजकुलेवीहीतेव्रा

नाथा देवा धीना पपाप राग बीया गध वपुशा वाषट्श प्राठदा
नच हीनं ॥ मीथ्या मोहा सीता शोभ्रमती नमम बुधुर्ज दीध्यान शुन्यं
क्षं ॥ ४ ॥ स्तीत्वा स्वास्थाने सरेजे प्रणवमय मरकुंभ के सुक्ष्म मार्गे
शाने स्वांते प्रणीजे प्रगती न बहने ज्योतीरपे पराखे के लिगा केय
ब्रह्मवा के प्रचुर सुरत नुशंकर नस्थ तमी क्षंत ॥ ५ ॥ स्नात्वा
प्रयुश काले स्नपन विधी वीधो नां हनं गां गतोयं पुज्यार्थे वाक
दायी बह्वधर गहना १ खंड वीत्वे दवाणी ॥ नाणी ता पद्म मा
ला सरसी वीत्ते सीतां गंध पुष्पैस्तर्दयं क्षं ॥ ६ ॥ दुर्ग्ये मं
द्वा जपुके घटस्थ शत सहितै स्वापीतं ने वली गंमनोली

॥ श्रीमहादेव प्रसन्न

आदौ कर्म प्रसंगात्कलयति कलुशं मात्र कुक्षौ स्थितं मां कीन्मुत्रामेध्यम
धेकुलयति नितरां जाठरो जात वेदा ॥ यद्यच्च वा तत्र दुःखकुत इति वि
षमं शक्यते केन वक्तुं शक्यं तं यो मे पराधः सीव सीव सीव भो श्रीमहादे
व शंभो ॥ १॥ वाग्ये दुःखादीरेकात्मतुल्यतव पुस्त्यपाने पीषासा
जोशक्यं चेद्दीयेभ्यो भव गुणजनीनां जेतवो मां तु दंतीनां नातो गदी
दुःखाद्देशनपरीवशात् शंकरे न स्मरामी ॥ २॥ क्षंतं ॥ २॥ प्रोढो हं यैव
॥ ३॥ न स्छो विषयविशयरेपंच भर्ममसंधो भ्रष्ट न सो विवेक सुतथ न
युवति साधु सोख्ये नीश न श्येवे चीना कीहीनं मम हृदयमहो ॥ ४॥
मानगवादिहृदं क्षंतं ॥ ३॥ वाधी के चेद्दीयाणां कीकतिगनीमति

जरहेसेनकेलेतरसाक्षीपणदृढजालेनाहीह्मणुनविपरीतभाव
 नाउठतांत्याकरितासर्ववृत्तींचालयउपरमकरूनब्रह्माकारवृ
 तीकरावी॥ऐसादृग्दृश्यविवेकऋषेश्वररूपाकटाक्षेयथामति
 वर्णिलाजगन्नाथतो जगदात्मऋषेश्वरीप्रीतिपावो॥श्लोक॥यदे
 तिबुद्धिर्नेश्चलयाजीवन्मुक्तिपदेस्थिति॥काव्यपूर्वजियतिसा
 ऋषीश्वरपदेस्थिता॥१॥तत्पारांबुरहहृदं ध्यानंधूतधियामया
 ॥प्रसूताकारीदृग्दृश्यविवेकाभिधेयकथा॥२॥यदेवमोक्तपूर्वस्या
 (क्षेप्यतांगुरूपेवतत्॥प्रियतामनयानिहं सोयमज्ञाततत्परा॥३॥ई
 ति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितेवाक्यसुधानामंत्रकरणसंपूर्ण॥दीनाजगन्ना
 थस्तसंपूर्ण॥श्रीसद्गुरुनाथापणिमस्तु॥४॥ ॥५॥ ॥५॥